# विषय सूची


| बोल नं० | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| | मुख पृष्ठ | १ |
| | आभार प्रदर्शन | २ |
| | दो शब्द | ३ |
| | पुस्तक प्रकाशन समिति | ४ |
| | विषय सूची, पता | ५-८ |
| | अकाराद्यनुक्रमणिका | ६ |
| | आनुपूर्वी | क |
| | आनुपूर्वी कण्ठस्थ गुणने की सरल विधि | ग |
| | शुद्धि पत्र | |
| | मंगलाचरण | १ |
| | २० वां बोलः— | ३-६० |
| ६०१ | श्रुतज्ञान के बीस भेद | ३ |
| ६०२ | तीर्थङ्कर नाम कर्म बाँधने के बीस बोल | ५ |
| ६०३ | विहरमान बीस | ८ |
| ६०४ | बीस कल्प (साधु के) | ६ |
| ६०५ | परिहार विशुद्धि चारित्र के बीस द्वार | १६ |
| ६०६ | असमाधि के बीस स्थान | २१ |
| ६०७ | आश्रव के बीस भेद | २५ |
| ६०८ | संवर के बीस भेद | २५ |
| ६०९ | चतुरंगीय (उत्तराध्ययन के तीसरे अध्ययन की बीस गाथाएं) | २६ |
| ६१० | विपाक सूत्र (दुःख विपाक और सुख विपाक) की बीस कथाएं | २६ |
| | २१ वां बोलः—६११-१५६ | |
| ६११ | श्रावक के इक्कीस गुण | ६१ |
| ६१२ | पानी पानकजात-धोवण इक्कीस प्रकार का | ६३ |
| ६१३ | शबल दोष इक्कीस | ६८ |
| ६१४ | विद्यमान पदार्थ की अनुपलब्धि के इक्कीस कारण | ७१ |
| ६१५ | पारिणामिकी बुद्धि के इक्कीस दृष्टान्त | ७३ |
| ६१६ | सभिक्खु (दशवैकालिक दसवैं) अध्ययन की इक्कीस गाथाएं | १२६ |
| ६१७ | उत्तराध्ययन सूत्र के चरणविहि नामक ३१ वें अध्ययन की २१ गाथाएं | १३० |
| ६१८ | प्रश्नोत्तर २१, | १३३-१५७ |
| (१) | ऊंकार का अर्थ पंच-परमेष्ठी कैसे ? | १३४ |
| (२) | संघ तीर्थ है या तीर्थङ्कर तीर्थ है ? | |

| प्रश्न बोल नं० | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| (३) | सिद्धशिला और अलोक के बीच कितना अन्तर है ? | १३५ |
| (४) | पुरिमताल नगर में तीर्थङ्कर के विचरते हुए अभग्गसेन का वध कैसे हुआ ? | १३५ |
| (५) | भव्य जीवों के सिद्ध हो जाने पर क्या लोक भव्यों से शून्य हो जायगा ? | १३६ |
| (६) | अवधि से मनःपर्यय ज्ञान अलग क्यों कहा गया ? | १३७ |
| (७) | अक्षर का क्या अर्थ है ? | १३८ |
| (८) | सातावेदनीय की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की या बारह मुहूर्त की ? | १३९ |
| (९) | कल्पवृक्ष क्या सचित्त वनस्पति रूप तथा देवाधिष्ठित हैं ? | १४० |
| (१०) | स्त्री के गर्भ की स्थिति कितनी है ? | १४१ |
| (११) | क्या एकल विहार शास्त्र सम्मत है ? | १४२ |
| (१२) | आवश्यक क्रिया के समय क्या ध्यानादि करना उचित है ? | १४३ |
| (१३) | व्रत धारण न करने वाले के लिए भी क्या प्रतिक्रमण आवश्यक है ? | १४४ |
| (१४) | लौकिक फल के लिये यक्ष यक्षिणी को पूजना क्या सदोष है ? | १४६ |
| (१५) | चतुर्थ भक्त प्रत्याख्यान का क्या मतलब है ? | १४९ |
| (१६) | खुले मुँह कही गई भाषा सावद्य होती है या निरवद्य होती है ? | १५० |
| (१७) | क्या श्रावक का सूत्र पढ़ना शास्त्र सम्मत है ? | १५० |
| (१८) | सात व्यसनों का वर्णन कहाँ मिलता है ? | १५५ |
| (१९) | लोक में अन्धकार के कितने कारण हैं ? | १५६ |
| (२०) | अजीर्ण कितने प्रकार का है ? | १५७ |
| (२१) | साधु को कौन सा वाद किसके साथ करना चाहिये ? | १५७ |

**२२ वां बोलः—१५९-१६६**

| | | |
|---|---|---|
| ९१९ | साधु धर्म के विशेषण बाईस | १५९ |
| ९२० | परीषह बाईस | १६० |
| ९२१ | निग्रह स्थान बाईस | १६२ |

**२३ वां बोलः—१६६-१७६**

| बोल नं० | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| ६२२ | भगवान् महावीर की चर्या विषयक (आचारांग ६ वॉ अ० उ० १ गाथाएं तेईस | १६६ |
| ६२३ | साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य स्थान तेईस | १७० |
| ६२४ | सूयगडांग सूत्र के तेईस अध्ययन | १७३ |
| ६२५ | क्षेत्र परिमाण के तेईस भेद | १७३ |
| ६२६ | पाँच इन्द्रियों के तेईस विषय तथा २४० विकार | १७५ |
| | **२४ वां बोलः—१७६-२१५** | |
| ६२७ | गत उत्सर्पिणी के चौवीस तीर्थङ्कर | १७६ |
| ६२८ | ऐरवत क्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणी के चौवीस तीर्थङ्कर | १७६ |
| ६२९ | वर्तमान अवसर्पिणी के चौवीस तीर्थङ्कर | १७७ |
| ६३० | भरतक्षेत्र के आगामी २४ तीर्थङ्कर | १९६ |
| ६३१ | ऐरवत क्षेत्र के आगामी २४ तीर्थङ्कर | १९७ |
| ६३२ | सूयगडांग सूत्र के दसवें समाधि अध्ययन की चौवीस गाथाएं | १९७ |
| ६३३ | विनय समाधि अध्य० दशवैकालिक ६ वॉ अध्ययन उ० २ की चौवीस गाथाएं | २०१ |
| ६३४ | दण्डक चौवीस | २०४ |
| ६३५ | धान्य के चौवीस प्रकार | २०५ |
| ६३६ | जात्युत्तर चौवीस | २०६ |
| | **२५ वां बोल—२१५-२२४** | |
| ६३७ | उपाध्याय के पचीस गुण | २१५ |
| ६३८ | पाँच महाव्रत की पचीस भावनाए | २१७ |
| ६३९ | प्रतिलेखना के पचीस भेद | २१८ |
| ६४० | क्रिया पचीस | २१८ |
| ६४१ | सूयगडांग सूत्र के पाँचवें अ० (दूसरे उ०) की पचीस गाथाएं | २१९ |
| ६४२ | आर्य क्षेत्र साढ़े पचीस | २२३ |
| | **२६ वां बोलः—२२५-२५८** | |
| ६४३ | छब्बीस बोलों की मर्यादा | २२५ |
| ६४४ | वैमानिक देव के छब्बीस भेद | २२७ |
| | **२७ वां बोलः—२२८-२३०** | |
| ६४५ | साधु के सत्ताईस गुण | २२८ |

| बोल नं० | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| ६४६ | सूयगडांग सूत्र के चौदहवें अध्ययन की सत्ताईस गाथाए | २३० |
| ६४७ | सूयगडांग सूत्र के पाँचवें अध्ययन (पहले उद्देशे) की सत्ताईस गाथाएं | २३६ |
| ६४८ | आकाश के सत्ताईस नाम | २४१ |
| ६४९ | औत्पत्तिकी बुद्धि के सत्ताईस दृष्टान्त | २४२ |
| **२८ वां बोलः—२८३-२९९** | | |
| ६५० | मतिज्ञान के अट्ठाईस भेद | २८३ |
| ६५१ | मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृतियाँ | २८४ |
| ६५२ | अनुयोग देने वाले के अट्ठाईस गुण | २८६ |
| ६५३ | अट्ठाईस नक्षत्र | २८८ |
| ६५४ | लब्धियाँ अट्ठाईस | २८९ |
| **२९ वां बोलः—२९९-३०७** | | |
| ६५५ | सूयगडांग सूत्र के महावीर स्तुति नामक छठे अध्ययन की २९ गाथाएं | २९९ |
| ६५६ | पाप श्रुत के २९ भेद | ३०५ |
| **३० वां बोलः—३०७-३१६** | | |
| ६५७ | अकर्म भूमि के तीस भेद | ३०७ |
| ६५८ | परिग्रह के तीस नाम | ३१० |
| ६५९ | भिक्षाचार्य के तीस भेद | ३१० |
| ६६० | महामोहनीय कर्म के तीस स्थान | ३१० |



पुस्तक मिलने का पता—

**अगरचन्द भैरोदान सेठिया**

जैन पारमार्थिक संस्था,

मोहल्ला मरोटीयां का

बीकानेर ( राजस्थान )